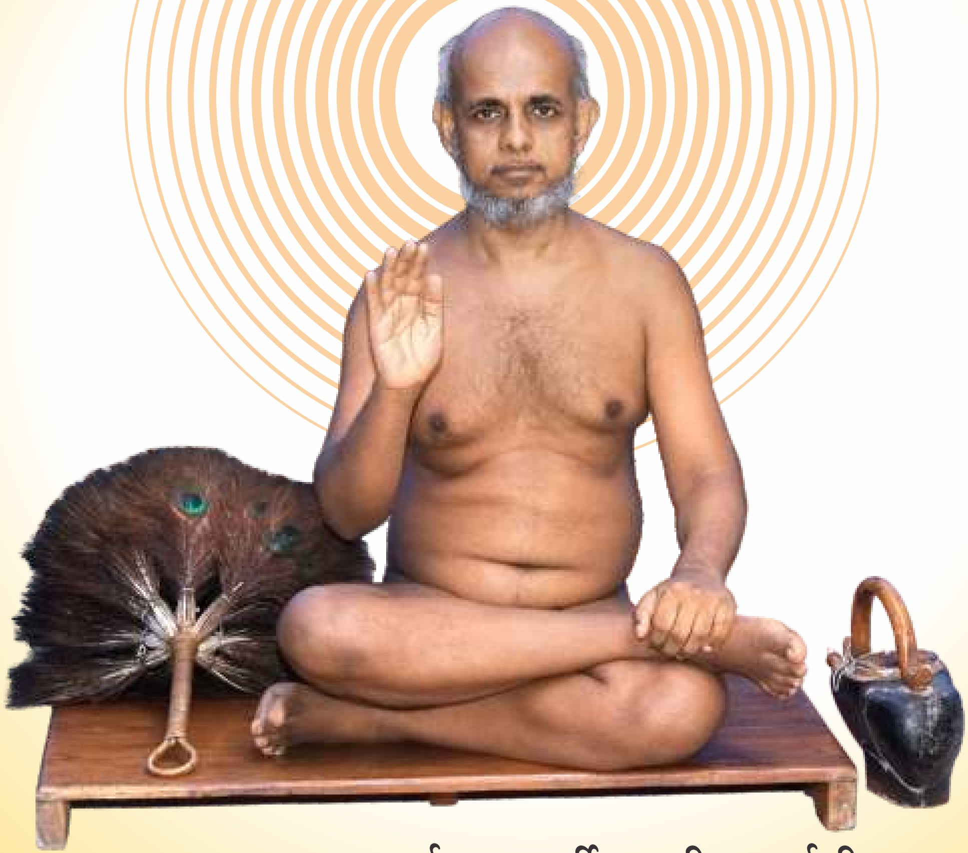

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

ह्रीं

ह्रीं बीजाक्षर पूजा

रचयित्री
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिकाश्री चन्दनामती माताजी

प्रकाशक:
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर-मेरठ (उत्तरप्रदेश)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 305
ISBN 978-93-80353-01-2

ह्रीँ बीजाक्षर पूजा

–रचयित्री–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के पावन सानिध्य में 21 दिसम्बर 2008 को भारत की राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील के करकमलों द्वारा उद्घाटित ''विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन'' के अनन्तर पूज्य माताजी द्वारा घोषित 'शांति वर्ष-2009' के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.- (01233) 280184, 292943

Website : www.jambudweep.org

E-mail : ravindrajain@jambudweep.org

COURTESY—JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

प्रथम संस्करण	वीर नि.सं. 2535	मूल्य
1100 प्रतियाँ	श्रावण शु. एकादशी, 1 अगस्त 2009	16/-रुपये

आर्यिका चंदनामती माताजी का 21वाँ दीक्षा दिवस

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

-: निर्देशन :-

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

-: सम्पादक :-

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन

जैनकुल में जन्म लेने वाला प्रत्येक प्राणी इस बात को भली-भांति जानता है कि जैनधर्म में 24 तीर्थंकर होते हैं और वह उन चौबीस भगवन्तों की दर्शन-पूजन-आरती आदि के माध्यम से आराधना भी करता है।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से समय-समय पर अनेक लघु एवं वृहत् काय पुस्तकों का लेखन कार्य होता रहता है और तीर्थोद्धार संबंधी निर्माणात्मक कार्यों की प्रेरणा भी प्राप्त होती रहती है।

पूज्य माताजी बहुत समय पूर्व से शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों में 'ह्रीँ' मंत्र का ध्यान कराया करती हैं। उन्होंने सन् 1980 में दिल्ली में एक बार जब इसका ध्यान कराया, तो अनेक शिविरार्थियों ने ह्रीँ का पंचवर्णी चित्र बनाया था। सन् 1983 में आर्यिका श्री रत्नमती अभिनंदन ग्रंथ में चौबीस तीर्थंकर के नामों से समन्वित ह्रीँ का पंचवर्णी रंगीन चित्र प्रकाशित किया गया पुनः सन् 1990 में माताजी की प्रेरणा से ह्रीँ की अष्टधातुमयी प्रतिमा (5 फुट की) चौबीसों तीर्थंकर की पद्मासन प्रतिमाओं से समन्वित निर्मित करके ध्यान मंदिर में विराजमान हुई हैं। ह्रीँ प्रतिमा को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में विराजमान करने के बाद अनेक लोगों ने समय-समय पर माताजी की प्रेरणा से 'ह्रीं' प्रतिमा को विराजमान किया, जिसे स्थान-स्थान पर भेजने का पुण्य मुझे प्राप्त हुआ। उसी श्रृँखला में पूज्य माताजी की ही पावन प्रेरणा से गोम्मटगिरि इंदौर में भी 'ह्रीँ' प्रतिमा की स्थापना की गई, जहाँ हजारों यात्री प्रतिदिन वंदना एवं पूजन करके धर्मलाभ ले रहे हैं।

यहाँ के पदाधिकारियों की अतीव इच्छा थी कि पूज्य माताजी ह्रीँ में निहित 24 तीर्थंकरों के परिचय एवं अर्घ्य आदि की एक पुस्तिका बनवा दें। उनके अतीव आग्रह को देखते हुए पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा प्राप्त कर उनकी सुशिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने इस ''ह्रीँ बीजाक्षर पूजा' नामक पुस्तक की रचना की है।

इस लघु कृति के द्वारा आप सभी ह्रीँ का ध्यान एवं चौबीसों भगवान की भक्ति कर महान पुण्य का संचय करें और अपने मनोरथों की सिद्धि करें, यही मंगलकामना है।

प्रस्तावना

–ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

''ह्रीं'' इस पवित्र मंत्र में वर्तमानकालीन चौबीस तीर्थंकर भगवान समाहित हैं, इस मंत्र की आराधना साधु व श्रावकगण प्रतिदिन अपने मंत्र जाप्य में करते हैं। जैसे-''ॐ ह्रीं नमः'' ''ॐ ह्रीं अर्हं असि आ उ सा नमः'' इत्यादि। इस मंत्र के आराधन से हमारे अशुभ कर्मों की निर्जरा होकर शुभ कर्म का बंध होता है।

प्राचीनकाल से इस मंत्र की आराधना तो की जाती है परन्तु इस 'ह्रीं' बीजाक्षर से संयुक्त कोई जिनालय प्राचीन समय से अब तक कहीं बना हो, ऐसा देखने में नहीं आया। यह इस कलिकाल का सौभाग्य ही है कि बीसवीं सदी में ब्राह्मी माता की प्रतिकृति के रूप में अवतरित जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने आगम के गूढ़तम विषयों को विभिन्न माध्यमों से विश्व के सम्मुख प्रकट किया है, जिसमें अनेक आगमोक्त नूतन रचनाएँ, अनेक साहित्यसृजन आदि आते हैं। उसी क्रम में उनकी पावन प्रेरणा से जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में ह्रीं मंदिर का निर्माण प्रथम बार हुआ, जो ध्यान मंदिर के नाम से प्रसिद्धि को प्राप्त है, उसके पश्चात् पूज्य माताजी की प्रेरणा से अनेक स्थानों पर ह्रीं की प्रतिमा विराजमान की गई। जिस प्रकार ह्रीं की प्रतिमा प्रथम बार जनमानस के समक्ष आयी, उसी प्रकार यह 'ह्रीँ बीजाक्षर पूजा' (लघु विधान) भी प्रथम बार लोगों के समक्ष आ रहा है। क्योंकि अभी तक किसी ने इस प्रकार के पूजन-विधान की रचना की हो, ऐसा सुनने में नहीं आया।

उस ह्रीं में विराजमान चौबीसों तीर्थंकरों की आराधना-पूजा-भक्ति हेतु पूज्य माताजी ने इस लघु पुस्तिका की रचना की है। इस पुस्तिका में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा 'ह्रीं' बीजाक्षर का परिचय, उनकी शिष्या आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा लिखित ह्रीं पूजा, ह्रीं में लिखित अलग-अलग वर्णों के 24 भगवन्तों के अर्घ्य एवं आरती आदि हैं।

प्रज्ञाश्रमणी पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी एक सिद्धहस्त लेखिका

हैं, उनकी लेखनी चलती नहीं अपितु बोलती है और जगत के अज्ञानी प्राणियों को नूतन दिशा दिखाकर उनमें नई स्फूर्ति का संचार करती है। लगभग 40 वर्षों से पूज्य माताजी के चरणसानिध्य में रहकर धर्माराधना-ज्ञानाराधना करते हुए उन्होंने आगम का गूढ़ ज्ञान पूज्य माताजी से प्राप्त किया है, जिसके फलस्वरूप ही उनकी कृतियों में आगम का सार भरा रहता है।

इस लघु किन्तु सारभूत कृति के द्वारा सुधी पाठक जिनेन्द्र आराधना के द्वारा अपने कर्मों की निर्जरा कर महान पुण्य का बंध करें तथा पूज्य माताजी की छत्रछाया में रहकर हम भी आगम का गूढ़ ज्ञान प्राप्त कर अपने मानव जीवन को सार्थक करें, यही शुभेच्छा है।

चौबीस तीर्थंकर समन्वित ह्रीँ बीजाक्षर प्रतिमा निर्माण की प्रेरणास्रोत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख
श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त–परिचय

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991(सन् 1934)

गृहस्थ का नाम–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से।

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में।

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तीर्थ का निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस

चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा निर्माण की प्रेरणा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका

श्री चन्दनामती माताजी का संक्षिप्त परिचय

-ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

नाम–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

दीक्षा पूर्व नाम–ब्र. कु. माधुरी शास्त्री

जन्मतिथि–18-5-1958 (ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या)

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जी जैन

भाई–चार (कैलाशचंद, स्व. प्रकाशचंद, सुभाषचंद एवं कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र जैन)

बहन–आठ (गणिनी आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री अभयमती माताजी सहित)

लौकिक शिक्षा–हाईस्कूल

गुरुसंघ में आगमन–सन् 1969

आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत–सन् 1971, अजमेर में सुगंध दशमी को गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से

धार्मिक अध्ययन–1972 में सोलापुर से "शास्त्री" की उपाधि, 1973 में "विद्यावाचस्पति" की उपाधि

द्वितीय एवं सप्तम प्रतिमा के व्रत–सन् 1981 एवं 1987 में गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से

आर्यिका दीक्षा–हस्तिनापुर में 13-8-1989, श्रावण शु. 11 को गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी से

प्रज्ञाश्रमणी की उपाधि–1997 में चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान के पश्चात् राजधानी दिल्ली में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा।

साहित्यिक योगदान–चारित्रचन्द्रिका, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान, नवग्रहशांति विधान, भक्तामर विधान आदि लगभग 100 पुस्तकों का लेखन, वर्तमान में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा "षट्खण्डागम (प्राचीनतम जैन सूत्र ग्रंथ) एवं "भगवान ऋषभदेव चरितम्" की संस्कृत टीकाओं का हिन्दी अनुवाद कार्य, 'समयसार' एवं 'कुन्दकुन्दमणिमाला' इत्यादि ग्रंथों का पद्यानुवाद। भजन (300 से अधिक), पूजन, चालीसा, स्तोत्र इत्यादि लेखन की अद्भुत क्षमता, हिन्दी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं की सिद्धहस्त लेखिका, गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ की प्रधान सम्पादिका।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

—पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 में हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं-

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है—कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना एवं नवग्रहशांति जिनमंदिर।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

12. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना से समन्वित हीरक जयंती एक्सप्रेस।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं शारीरिक सुख की प्राप्ति करें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारीबावली, दिल्ली।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जी पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली

नवदेवता पूजन

–गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

–गीता छन्द –

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर, मूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहाँ, मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक –

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूँ मुदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित, तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नवसु चढ़ायके।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतू, पूजहूँ नत भाल मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे, दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

जलधारा से नित्य मैं, जग की शांति हेत।
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

नानाविध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः।**

जयमाला

सोरठा – **चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।**
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।1।।

(चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति......)

जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।2।।

आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।
जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।3।।

जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।4।।

जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिन की ध्वनि पीयूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।5।।

जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।6।।

नव देवताओं की जो नित आराधना करें।

वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण "ज्ञानमती" सिद्धि हेतु ही भजूँ।।7।।

–दोहा–

नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार ले, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते।।9।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

णमोकार मंत्र स्तवन

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

–शिखरिणी छंद–

णमो अरिहंताणं, नमन है अरिहंत प्रभु को।
णमो सिद्धाणं में, नमन कर लूँ सिद्ध प्रभु को।।
णमो आइरियाणं, नमन है आचार्य गुरु को।
णमो उवज्झायाणं, नमन है उपाध्याय गुरु को।।1।।

णमो लोए सव्वसाहूणं पद बताता।
नमन जग के सब साधुओं को करूँ जो हैं त्राता।।
परमपद में स्थित कहें पाँच परमेष्ठि इनको।
नमन इनको करके लहूँ इक दिन मुक्ति पद को।।2।।

सभी के पापों को शमन करता मंत्र यह ही।
तभी सब मंगल में प्रथम माना मंत्र यह ही।।
जपें जो भी इसको वचन मन कर शुद्ध प्रणति।
लहें वे इच्छित फल, हृदय नत हो चन्दनामति।।3।।

ह्रीँ का परिचय

अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे ऋषभाद्या जिनोत्तमाः।
वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ता, ध्यातव्यास्तत्र संगताः।।

नादश्चन्द्रसमाकारो, बिंदुर्नीलसमप्रभः।
कलारुणसमाः सांतः स्वर्णाभः सर्वतोमुखः।।

शिरःसंलीन ईकारो, विनीलो वर्णतः स्मृतः।
वर्णानुसारि सलीनं तीर्थकृन्मंडलं नमः।।

चन्द्रप्रभपुष्पदन्तौ, नादस्थितसमाश्रितौ।
बिंदुमध्यगतौ नेमिसुव्रतौ जिनसत्तमौ।।

पद्मप्रभवासुपूज्यौ कलापदमधिश्रितौ।
शिर ईस्थितिसंलीनौ, पार्श्वपार्श्वौ जिनोत्तमौ।।

शेषास्तीर्थंकराः सर्वे, रहस्थाने नियोजिताः।
मायाबीजाक्षरं प्राप्ताश्चतुर्विंशतिरर्हतम्।।

(ऋषिमण्डल स्तोत्र से उद्धृत)

अर्थ–इस 'ह्रीँ' बीजाक्षर में ऋषभदेव आदि चौबीस तीर्थंकर स्थित हैं, वे अपने-अपने वर्णों से युक्त हैं उनका ध्यान करना चाहिए। इस ह्रीँ में जो नाद (ँ) है वह चन्द्र के समान आकार व वर्ण वाला है, जो बिन्दु (·) है वह नील मणि की प्रभा वाली है। जो कला (–) है वह लाल वर्ण की है और जो 'ह'

वर्ण है वह स्वर्ण के समान आभा वाला है। शिर के ऊपर जो (ी) ईकार है, वह हरित वर्ण का है। इस तरह उन-उन वर्ण वाले तीर्थंकर देव उन-उन वर्ण के स्थानों में स्थित हैं उन सबको मेरा नमस्कार होवे।

चन्द्रप्रभ और पुष्पदंत श्वेत वर्ण वाले होने से ये दोनों नाद (ँ) में स्थित हैं। नेमिनाथ और मुनिसुव्रत भगवान नील वर्ण वाले हैं अतः वे बिन्दु (·) में विराजमान हैं। पद्मप्रभ तथा वासुपूज्य देव लाल वर्ण वाले होने से वे कला (–) में विराजमान हैं तथा सुपार्श्व और पार्श्वनाथ भगवान् हरित वर्ण के हैं अतः वे शिर के ऊपर स्थित ईकार (ी) में स्थित हैं तथा शेष सोलह तीर्थंकर सुवर्ण के समान छवि वाले होने से र् और ह् (ह्र) में स्थापित किये गये हैं। इस प्रकार ये चौबीसों ही तीर्थंकर इस माया बीजाक्षर (ह्रीँ) को प्राप्त हो गये हैं। अर्थात् चौबीसों ही तीर्थंकर इस बीजाक्षर रूप को प्राप्त हो गये हैं।

-गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

ह्रीँ बीजाक्षर पूजा

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

–अनुष्टुप् छंद –

ह्रींकारं चन्द्रसंयुक्तं, तीर्थंकरसमन्वितं।
पंचवर्णप्रभं चैव, ह्रीँकाराय नमो नमः।।

–शंभु छंद –

सब बीजाक्षर में ह्रीं एक, बीजाक्षर पद कहलाता है।
यह एक अक्षरी मंत्र सभी, जिनवर का ज्ञान कराता है।।
चौबिस जिनवर से युक्त ह्रीं, की प्रतिमा अतिशयकारी है।
इसका अर्चन वंदन भव्यों के, लिए सदा हितकारी है।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमन्वित ह्रीं प्रतिमे! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमन्वित ह्रीं प्रतिमे! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमन्वित ह्रीं प्रतिमे! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक –

ह्रीं को मेरा नमस्कार है, चौबिस जिनवर से जो साकार है।
पूजन से होता बेड़ा पार है, प्रतिमा में ऐसा चमत्कार है।।टेक.।।
माया में डूबा यह संसार है, जिनवर ही ज्ञान का भण्डार हैं।
मुझको भी ज्ञान का आधार है, कर दो प्रभु मेरी नैय्या पार है।।
चरणों में डालूँ जल की धार है, चौबिस जिनवर को नमस्कार है।
ह्रीं को मेरा नमस्कार है, चौबिस जिनवर से जो साकार है।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमन्वित ह्रीं जिनप्रतिमायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

दुनिया का राग तजकर आ गया, प्रभु का विराग मुझको भा गया।
प्रभु के गुणों की सौरभ पा गया, मेरा दिल प्रभु में ही समा गया।।
चंदन तो पूजन का प्रकार है, चर्चूं प्रभु पद में बारम्बार मैं।
ह्रीं को मेरा नमस्कार है, चौबिस जिनवर से जो साकार है।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमन्वित ह्रीं जिनप्रतिमायै चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रियसुख में मैं अब तक लीन था, आतम के ज्ञान से विहीन था।
शाश्वत सुख को न अब तक पा सका, आतम अनुभव न मुझको आ सका।
पूजन से हो अक्षय भण्डार है, अक्षत चढ़ाऊँ तेरे द्वार मैं।
ह्रीं को मेरा नमस्कार है, चौबिस जिनवर से जो साकार है।।3।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमन्वित ह्रीं जिनप्रतिमायै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीसों जिनवर जग को छोड़कर, संयम लिया सबसे मुख मोड़कर।
इनमें ही पाँच बालयति हुए, आतम में रमकर मुक्तिपति हुए।।
पुष्पों से पूजा मनहार है, कामारिविजयी का भण्डार है।
ह्रीं को मेरा नमस्कार है, चौबिस जिनवर से जो साकार है।।4।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमन्वित ह्रीं जिनप्रतिमायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

कितने ही व्यंजन मैंने खाए हैं, लेकिन न तृप्ती कर पाए हैं।
प्रभु ने क्षुधा का नाश कर दिया, आतम का स्वाद उनने चख लिया।।
क्षुधरोग नाशन हेतु आज मैं, नैवेद्य से भर लाया थाल मैं।
ह्रीं को मेरा नमस्कार है, चौबिस जिनवर से जो साकार है।।5।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमन्वित ह्रीं जिनप्रतिमायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत के दीपक जग में जलते हैं, रात्रि का अंधकार हरते हैं।
मोह अन्धेरा नहीं हरते हैं, पुद्गल पर्यायों में उलझते हैं।।
दीपक मैं लाया प्रभु के द्वार है, आरति करूँ मैं बारम्बार है।
ह्रीं को मेरा नमस्कार है, चौबिस जिनवर से जो साकार है।।6।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमन्वित ह्रीं जिनप्रतिमायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों से निर्मित यह संसार है, दुर्लभ इससे हो जाना पार है।
मानव ही इसमें ऐसा प्राणी है, वर सकती जिसको शिवरानी है।।

धूप जलाऊँ प्रभु के द्वार है, भक्ती की महिमा अपरम्पार है।
ह्रीं को मेरा नमस्कार है, चौबिस जिनवर से जो साकार है।।7।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमन्वित ह्रीं जिनप्रतिमायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मनवांछित फल की सिद्धी हेतु मैं, फिरता हूँ मारा मारा देव मैं।
जिनवर शरण में जब से आ गया, इच्छित फल को ही मानो पा गया।।
फल से ही मुक्ती फल साकार है, प्रभु के चरणों में नमस्कार है।
ह्रीं को मेरा नमस्कार है, चौबिस जिनवर से जो साकार है।।8।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमन्वित ह्रीं जिनप्रतिमायै फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों ही द्रव्यों को सजाया है, सोने की थाली भर कर लाया मैं।
प्रभुवर जैसे गुणों को पाऊँ मैं, चरणों में अर्घ्य को चढ़ाऊँ मैं।।
जलफल आठों ही शुचिसार हैं, चौबिस जिनवर को नमस्कार है।
ह्रीं को मेरा नमस्कार है, चौबिस जिनवर से जो साकार है।।9।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमन्वित ह्रीं जिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ह्रीं को मेरा नमस्कार है, चौबिस जिनवर से जो साकार है।
पूजन से होता बेड़ा पार है, प्रतिमा में ऐसा चमत्कार है।।
यमुना सरिता का नीर लाया मैं, ह्रीं प्रतिमा के पास आया मैं।
चौबिस जिनवर की पावन छाया में, जग में भी रहकर शांति पाया मैं।।
कंचनझारी में जल की धार है, शान्तीधारा से बेड़ा पार है।
ह्रीं को मेरा नमस्कार है, चौबिस जिनवर से जो साकार है।।10।।
शान्तये शांतिधारा।

ह्रीं को मेरा नमस्कार है, चौबिस जिनवर से जो साकार है।
पूजन से होता बेड़ा पार है, प्रतिमा में ऐसा चमत्कार है।।
जग में न जाने कितने फूल हैं, उनमें ही भ्रमता निज की भूल में।
उनका उपयोग मैं न कर सका, अपना श्रृंगार ही बस कर सका।।
पुष्पों की अंजलि तेरे द्वार है, आत्मा का यही श्रृंगार है।
ह्रीं को मेरा नमस्कार है, चौबिस जिनवर से जो साकार है।।11।।
दिव्य पुष्पांजलिः।

स्वर्णिम ह में विराजित स्वर्ण वर्णमय सोलह तीर्थंकर भगवन्तों के अर्घ्य

–शेर छंद –

तीर्थेश प्रथम ऋषभदेव स्वर्ण वर्ण के।
वे हैं विराजमान 'ह' के स्वर्ण वर्ण में।।
उन पंचकल्याणक सहित जिनवर की अर्चना।
जिनवर से सहित ह्रीँ मंत्र की है वंदना।।1।।
ॐ ह्रीं स्वर्णवर्णतनुधारकतीर्थंकरश्रीऋषभदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थेश अजितनाथ स्वर्ण वर्ण के कहे।
वे ह्रीँ के ह स्वर्ण वर्ण में विराजते।।
उन पंचकल्याणक सहित जिनवर की अर्चना।
जिनवर से सहित ह्रीँ मंत्र की है वंदना।।2।।
ॐ ह्रीं स्वर्णवर्णतनुधारकतीर्थंकरश्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभव जिनेन्द्र स्वर्ण वर्ण से सहित कहे।
वे ह्रीँ के अन्दर ह वर्ण में विराजते।।
उन पंचकल्याणक सहित जिनवर की अर्चना।
जिनवर से सहित ह्रीँ मंत्र की है वंदना।।3।।
ॐ ह्रीं स्वर्णवर्णतनुधारकतीर्थंकरश्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थेश श्री अभिनंदन का स्वर्ण वर्ण है।
अतएव ह्रीँ मध्य ह में राजते वे हैं।।
उन पंचकल्याणक सहित जिनवर की अर्चना।
जिनवर से सहित ह्रीँ मंत्र की है वंदना।।4।।
ॐ ह्रीं स्वर्णवर्णतनुधारकतीर्थंकरश्रीअभिनंदननाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थेश सुमतिनाथ का सुवर्ण वर्ण है।
वे ह्रीँ बीजाक्षर के मध्य ह में रहते हैं।।

उन पंचकल्याणक सहित जिनवर की अर्चना।
जिनवर से सहित ह्रीँ मंत्र की है वंदना।।5।।

ॐ ह्रीं स्वर्णवर्णतनुधारकतीर्थंकरश्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थेश शीतलनाथ स्वर्ण वर्ण सहित हैं।
वे ह्रीँ के ह्र वर्ण में विराज रहे हैं।।
उन पंचकल्याणक सहित जिनवर की अर्चना।
जिनवर से सहित ह्रीँ मंत्र की है वंदना।।6।।

ॐ ह्रीं स्वर्णवर्णतनुधारकतीर्थंकरश्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेयांसनाथ जिनवर का स्वर्ण वर्ण है।
वे हैं विराजमान ह्रीँ के ह्र वर्ण में।।
उन पंचकल्याणक सहित जिनवर की अर्चना।
जिनवर से सहित ह्रीँ मंत्र की है वंदना।।7।।

ॐ ह्रीं स्वर्णवर्णतनुधारकतीर्थंकरश्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विमलनाथ जिनवर का स्वर्ण वर्ण है।
वे ह्रीँ के ह्र वर्ण में विराजमान हैं।।
उन पंचकल्याणक सहित जिनवर की अर्चना।
जिनवर से सहित ह्रीँ मंत्र की है वंदना।।8।।

ॐ ह्रीं स्वर्णवर्णतनुधारकतीर्थंकरश्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर अनंतनाथ का सुवर्ण वर्ण है।
वे शोभते हैं ह्रीँ के ह्र स्वर्ण वर्ण में।।
उन पंचकल्याणक सहित जिनवर की अर्चना।
जिनवर से सहित ह्रीँ मंत्र की है वंदना।।9।।

ॐ ह्रीं स्वर्णवर्णतनुधारकतीर्थंकरश्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धर्मनाथ प्रभु का तन सुवर्ण वर्ण का।
उनसे सहित है ह्रीँ का ह्र वर्ण शोभता।।

उन पंचकल्याणक सहित जिनवर की अर्चना।
जिनवर से सहित ह्रीँ मंत्र की है वंदना।।10।।

ॐ ह्रीं स्वर्णवर्णतनुधारकतीर्थंकरश्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थेश शांतिनाथ स्वर्ण वर्ण सहित हैं।
उनसे भी ह्रीँ का ह्र पीत वर्ण सहित है।।
उन पंचकल्याणक सहित जिनवर की अर्चना।
जिनवर से सहित ह्रीँ मंत्र की है वंदना।।11।।

ॐ ह्रीं स्वर्णवर्णतनुधारकतीर्थंकरश्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंथुनाथ जिनवर हैं स्वर्ण वर्ण के।
जो हैं विराजमान ह्रीँ के ह्र वर्ण में।।
उन पंचकल्याणक सहित जिनवर की अर्चना।
जिनवर से सहित ह्रीँ मंत्र की है वंदना।।12।।

ॐ ह्रीं स्वर्णवर्णतनुधारकतीर्थंकरश्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थेश अरहनाथ जी का स्वर्ण वर्ण है।
अतएव ह्रीँ के ह्र वर्ण में विराजते।।
उन पंचकल्याणक सहित जिनवर की अर्चना।
जिनवर से सहित ह्रीँ मंत्र की है वंदना।।13।।

ॐ ह्रीं स्वर्णवर्णतनुधारकतीर्थंकरश्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थेश मल्लिनाथ स्वर्ण वर्ण के माने।
उनसे सहित ह्र वर्ण ध्यान के लिए जानें।।
उन पंचकल्याणक सहित जिनवर की अर्चना।
जिनवर से सहित ह्रीँ मंत्र की है वंदना।।14।।

ॐ ह्रीं स्वर्णवर्णतनुधारकतीर्थंकरश्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमिनाथ जिनेश्वर कहे सुवर्ण वर्ण के।
वे भी विराजमान ह्रीँ के ह्र वर्ण में।।

उन पंचकल्याणक सहित जिनवर की अर्चना।
जिनवर से सहित ह्रीँ मंत्र की है वंदना।।15।।
ॐ ह्रीं स्वर्णवर्णतनुधारकतीर्थंकरश्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीसवें तीर्थेश महावीर स्वर्णमय।
उनसे सहित ह्र वर्ण सुशोभे सुवर्णमय।।
उन पंचकल्याणक सहित जिनवर की अर्चना।
जिनवर से सहित ह्रीँ मंत्र की है वंदना।।16।।
ॐ ह्रीं स्वर्णवर्णतनुधारकतीर्थंकरश्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लालवर्ण की कला में विराजमान लालवर्णी दो तीर्थंकरों के अर्घ्य

–शंभु छंद –

तीर्थंकर श्री पद्मप्रभ का मूंगावर्णी तनु सुंदर था।
जिनकी सुंदरता को लखने में अक्षम स्वयं पुरंदर था।।
बीजाक्षर ह्रीँ की लाल कला में उन्हें विराजित किया गया।
उन लालवर्णि जिनवर चरणों में अर्घ्य समर्पित किया गया।।1।।
ॐ ह्रीं लालवर्णतनुधारकतीर्थंकरश्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य तीर्थंकर का तन लाल वर्ण सुंदर माना।
इसलिए उन्हें भी ह्रीँ मंत्र की लाल कला में पहचाना।।
उन पंचकल्याणक सहित जिनेश्वर का शुभ अर्चन करना है।
उन शक्ति सहित बीजाक्षर ह्रीँ को भी शत वंदन करना है।।2।।
ॐ ह्रीं लालवर्णतनुधारकतीर्थंकरश्रीपद्मप्रभुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरितवर्ण की ईकार में विराजमान हरितवर्णी दो तीर्थंकरों के अर्घ्य

तर्ज-जहाँ डाल-डाल पर......

जिनवर सुपार्श्व की पूजन से मिलती सुख शांति की छाया,
मैं अर्घ्य सजाकर लाया।।टेक.।।

जिनकी काया का हरित वर्ण, सबको आनंद प्रदाता।
बीजाक्षर ह्रीँ की हरितकाय, ईकार से उनका नाता।।
ईकार से.....
उन जिनवर युत ईकार ह्रीं में प्रभु का रूप समाया,
मैं अर्घ्य सजाकर लाया।।1।।
ॐ ह्रीं हरितवर्णतनुधारकतीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पार्श्वनाथ की पूजन से मिलती सुखशांति की छाया,
मैं अर्घ्य सजाकर लाया।।टेक.।।

वाराणसि में जन्मे पारस प्रभु हरित वर्ण अति सुंदर।
उनसे शोभित है ह्रीं मंत्र ईकार हरित अति सुखकर।।
ईकार.....
उन शक्ति समन्वित ह्रीँ बीज को हमने मन में ध्याया,
मैं अर्घ्य सजाकर लाया।।1।।
ॐ ह्रीं हरितवर्णतनुधारकतीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेतवर्णी अर्धचन्द्र में विराजमान श्वेतवर्ण के दो तीर्थंकरों के अर्घ्य

तर्ज-सज धज कर इक दिन.......

प्रभुपद में अर्घ्य समर्पण कर, पुण्यार्जन करना है।
श्री चन्द्रप्रभू की पूजन कर, मन पावन करना है।।टेक.।।

चन्दा सरीखा श्वेत मन, प्रभु आपका माना।
अतएव ह्रीँ का अर्धचन्द्र प्रभू सहित जाना।।
उन शक्ति समन्वित ह्रीँ पद का वंदन करना है।
श्री चन्द्रप्रभ की पूजन कर, मन पावन करना है।।1।।
ॐ ह्रीं श्वेतवर्णतनुधारकतीर्थंकर श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पद में अर्घ्य समर्पण कर, पुण्यार्जन करना है।
प्रभु पुष्पदंत की पूजन कर, मन पावन करना है।।टेक.।।

तन श्वेत है मन श्वेत है तीर्थंकर जिनवर का।
है अर्ध चन्द्र सुशोभता इनसे पदाक्षर का।।
उस ह्रीँ बीजाक्षर में प्रभु का सुमिरन करना है।
प्रभु पुष्पदंत की पूजनकर, मन पावन करना है।।2।।

ॐ ह्रीं श्वेतवर्णतनुधारकतीर्थंकर श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्यामवर्ण की गोलबिन्दु में विराजमान श्यामवर्णी दो तीर्थंकरों के अर्घ्य

तर्ज-माई रे माई.......

पूज्य अगर बनना चाहो तो, प्रभु की पूजन कर लो।
मुनिसुव्रत भगवान से संयुत, ह्रीँ मंत्र को नम लो।।
जय हो मुनिसुव्रत भगवान, जय हो ह्रीँ मंत्र का ध्यान।।टेक.।।

राजगृही में जन्मे प्रभु हैं, नीलवर्ण तनु धारी।
ह्रीँ की नीली बिन्दु बन गई, इनसे अतिशयकारी।।
जिनवर शक्ति सहित बीजाक्षर ह्रीँ को मन में भज लो।
मुनिसुव्रत भगवान से संयुत, ह्रीँ मंत्र को नम लो।।
जय हो मुनिसुव्रत भगवान, जय हो ह्रीँ मंत्र का ध्यान।।1।।

ॐ ह्रीं नीलवर्णतनुधारकतीर्थंकर श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूज्य अगर बनना चाहो तो, प्रभु की पूजन कर लो।
नेमिनाथ भगवान से संयुत, ह्रीँ मंत्र को नम लो।।
जय हो नेमिनाथ भगवान, जय हो ह्रीँ मंत्र का ध्यान।।टेक.।।

शौरीपुर के नेमिनाथ प्रभु, नीलवर्ण तनुधारी।
ह्रीँ की नीली बिन्दु बन गई, इनसे अतिशयकारी।।
जिनवर शक्ति सहित बीजाक्षर, ह्रीँ को मन में भज लो।
नेमिनाथ भगवान से संयुत, ह्रीँ मंत्र को नम लो।।
जय हो नेमिनाथ भगवान, जय हो ह्रीँ मंत्र का ध्यान।।2।।

ॐ ह्रीं नीलवर्णतनुधारक तीर्थंकरश्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

तर्ज –नागिन..........

जय जय प्रभुवर, चौबिस जिनवर, से सहित ह्रीं सुखकार है,
मनवांछित फल का दाता है।।
वर्तमान के चौबीसों, तीर्थंकर इसमें राजें।
जिनका जैसा वर्ण वहीं पर, सब जिनबिम्ब विराजें।।प्रभूजी.।।
बीजाक्षर है, एकाक्षर है, यह ह्रीं मंत्र शुभकार है,
मनवांछित फल का दाता है।।1।।

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमतिनाथ शीतल हैं।
श्रेयो विमल अनंत धर्मजिन, शांतिकुंथ अर प्रभ हैं।।प्रभूजी.।।
मल्लिनाथ यज लो, नमिनाथ भज लो,
श्रीवीर इन्हीं के साथ हैं, मनवांछित फल का दाता है।।2।।

ये सोलह तीर्थंकर पीले, स्वर्ण समान दिपे हैं।
स्वर्णिम ह्र के बीच सोलहों, बीज समान दिखे हैं।।प्रभूजी.।।
ध्यान साधन का, ज्ञान पावन का, यह पंचवर्णि आकार है,
मनवांछित फल का दाता है।।3।।

प्रथम कला में लाल वर्ण के, दो जिनराज सुशोभें।
पद्मप्रभु अरु वासुपूज्य का, लाल वर्ण मन मोहे।।प्रभूजी.।।
इन ध्यान धर लो, प्रभु ज्ञान कर लो,
ये परम शांति आधार हैं, मनवांछित फल का दाता है।।4।।

हरित वर्ण ईकार के अन्दर, पार्श्व सुपार्श्व विराजें।
मरकत मणिसम हैं वे सुन्दर, अनुपम छवियुत छाजें।।प्रभूजी.।।
इनको यजते, पातक भगते, सब कर्म कटें दुखकार है,
मनवांछित फल का दाता है।।5।।

अर्धचन्द्र में श्वेत वर्ण के, पुष्पदंत चन्द्रप्रभ।
नीलवर्ण की गोलबिन्दु में, नेमिनाथ मुनिसुव्रत।।प्रभूजी.।।

उन जिनवर की, उन प्रभुवर की, करूँ पूजन बारम्बार मैं,
मनवांछित फल का दाता है।।6।।

पल दो पल अपने जीवन में, ह्रीं का ध्यान लगाएँ।
शुभ्र ध्यान का अवलम्बन ले, अशुभ विकल्प भगाएँ।।प्रभूजी.।।
मिलती सुगती, ''चन्दनामती'', इस ह्रीँ बीज आधार से,
मनवांछित फल का दाता है।।7।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमन्वितह्रींजिनप्रतिमायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

रागद्वेष के चक्र से, मुक्ति चहें यदि भव्य।
निश्चित ही इस ह्रीँ में, लीन करो मन शक्य।।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

ह्रीँ की आरती

तर्ज–साजन मेरा उस पार है........

ह्रीँ को मेरा नमस्कार है,
चौबिस जिनवर से जो साकार है।हो ओ.....
आरति करूँ मैं बारम्बार है,
चौबिस जिनवर को नमस्कार है।।टेक.।।

ऋषभाजित संभव अभिनंदनं, सुमति शीतल व श्रेयो जिनवरम्।
विमल अनंत धर्म सार हैं, शांति, कुंथु, अर करते पार हैं।।ह्रीं.....।।1।।

मल्लिप्रभु नमिनाथ राजते, सबके ही संग में विराजते।
वीरा की महिमा अपरम्पार है, आरति उतारूं बारम्बार है।।ह्रीं.....।।2।।

सोलह तीर्थंकर ह्र में शोभते, केशरिया वर्ण से सुशोभते।
स्वर्ण छवि सुखकार है, आरति उतारूं बारम्बार है।।ह्रीं....।।3।।

पद्मप्रभ वासुपूज्य राजते, कला में दोनों ही विराजते।
लाल वरण शुभकार है, दोनों प्रभू को नमस्कार है।।ह्रीं.....।।4।।

पारस सुपारस हरित वर्ण के, सर्प व स्वस्तिक जिनके चिन्ह हैं।
इनसे सुशोभित ईकार है, जिनवर युगल को नमस्कार है।।ह्रीं.....।।5।।

चन्द्रप्रभ पुष्पदन्त नाम है, चन्द्रमा में विराजमान हैं।
श्वेत धवल आकार है, जिनवर की आरति सुखकार है।।ह्रीं.....।।6।।

मुनिसुव्रत नेमीप्रभु श्याम हैं, जिनका बिन्दु में स्थान है।
दीपक ले आए प्रभु के द्वार हैं, आरति उतारूं बारम्बार है।।ह्रीं.....।।7।।

''चंदनामती'' करे वंदना, ध्यान करो तो दुःख रंच ना।
पंचवर्ण सुखकार है, आरति से होता बेड़ा पार है।।ह्रीं....।।8।।

भजन

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

शाम सबेरे दो घड़ी तू, ह्रीं का ध्यान लगाया कर।
चौबीसों तीर्थंकर को तू, मन मंदिर में ध्याया कर।।टेक.।।

स्वर्णाक्षर ह के अन्दर, वृषभाजित संभव अभिनन्दन।
सुमती शीतल श्रेयो जिनवर, विमल अनंत धर्म वंदन।।

शांति कुंथु अर मल्लि जिनेश्वर, नमिप्रभ वर्धमान स्वामी।
हरित वर्ण ईकार सुपारस, पारस-चिन्तामणि नामी।।

लालकला में पद्मप्रभ अरु, वासुपूज्य मन लाया कर।
चौबीसों तीर्थंकर को तू, मन मंदिर में ध्याया कर।।1।।

ह्रीं के बायीं ओर श्वेत है, अर्धचन्द्र आकार शिला।
श्वेत चन्द्रप्रभु पुष्पदन्त की, वाणी से मन कमल खिला।।

नीली गोल बिन्दु है ऊपर, उसमें नेमी मुनिसुव्रत।
आत्मशांति दाता चौबीसों, प्रभू 'चंदनामति' सुखप्रद।।

ह्रीं पंचवर्णी को प्रतिदिन, हृदय कमल में लाया कर।
चौबीसों तीर्थंकर को तू, मन मंदिर में ध्याया कर।।2।।

भजन

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

तर्ज-मेरा नम्र प्रणाम है...........

अर्हं मंत्र महान है,
अरहंतों की शक्ति बताता, अर्हं मंत्र महान है।।
जिसके ध्यान से आत्मा में जग जाता आतमज्ञान है।
अरहंतों की शक्ति बताता, अर्हं मंत्र महान है।।टेक.।।

चार घातिया कर्म नाशकर, नंत चतुष्ट्य प्राप्त किया।
तीर्थंकर अरिहंतरूप में, समवसरण में वास किया।।

वीतराग सर्वज्ञ हितंकर प्रभु को नम्र प्रणाम है।
अरिहंतों की शक्ति बताता, अर्हं मंत्र महान है।।1।।

स्वर-व्यंजन के पहले अंतिम अक्षर से यह मंत्र बना।
तीर्थंकर की दिव्यध्वनीमय द्वादशांग का अंश बना।।

इसके ध्यान से हर प्राणी को मिल सकता श्रुतज्ञान है।
अरिहंतों की शक्ति बतात, अर्हं मंत्र महान है।।2।।

हृदय ललाट व मस्तक में, इस मंत्र को स्थापित कर लो।
अन्तर्यात्रा के माध्यम से मन उस पर स्थिर कर लो।।

तभी ''चंदनमती'' ध्यान का फल पाते गुणवान हैं।
अरिहंतों की शक्ति बताता, अर्हं मंत्र महान है।।3।।